Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

ब्रह्मवैवर्तपुराण में राधा तत्त्व एक अनुशीलन

डॉ0 प्रभात कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
नेहरू ग्राम भारती डीम्ड विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 146-150
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

सारांश – पुराण का प्रधान लक्ष्य कृष्णचरित्र का विस्तृत वर्णन है। सृष्टि के अवसर पर परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं दो रूपों में प्रकट हो गये–प्रकृति और पुरूष। उनका दाहिना अंश पुरूष और बायाँ अंश प्रकृति हुआ। वही मूल प्रकृति श्रीराधा हुयी। ये ब्रह्मस्वरूपा नित्या और सनातनी है।

मुख्य शब्द – ब्रह्मवैवर्तपुराण, राधातत्त्व, संस्कृत,साहित्य, पुराण, संस्कृति।

संस्कृत साहित्य के उपजीव्य कहे जाने वाले तथा भारतीय संस्कृति का सम्यक् उद्घाटन पुराणों में ही प्राप्त होता है। 'पुराण' शब्द से तात्पर्य पुराना या प्राचीन अथवा जिसमें प्राचीन आख्यानों का वर्णन हो उसे पुराण शब्द से अभिहित किया गया है। वैदिक साहित्य में यह इसी अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। पुराणों में से कुछ पुराणों में सम्बन्धित उल्लेख उपलब्ध होता है। जैसे–ब्रह्मवैवर्त, पद्मपुराण, विष्णुपुराण, देवी, स्कन्ध इत्यादि। ब्रह्मवैवर्त पुराण में शौनक जी कहते हैं कि–

विवर्तं ब्रह्मकात्स्न्यं च कृष्णेन यत्र शौनक। ब्रह्मवैवर्तकं तेन प्रवदन्ति पुराविदः।।[1]

जिस पुराण में श्रीकृष्ण ने अपनी पूर्ण ब्रह्मरूपता को विवृत या प्रकट कर दिया है, अथवा जिसमें श्रीकृष्ण के ब्रह्मत्व के विवर्तों या परिणामों का पूर्णतया वर्णन किया गया है, उसको पुराणवेत्ताओं ने ब्रह्मवैवर्त के नाम से अभिहित किया है। ब्रह्मवैवर्त शब्द का अर्थ है–ब्रह्मणो विवर्तः परिणामः ब्रह्मविवर्तः, ब्रह्म का विवर्त परिणाम। ब्रह्म का आद्य विवर्त प्रकृति है अतः ब्रह्मविवर्त शब्द का अर्थ प्रकृति होता है। ब्रह्मविवर्तस्य (प्रकृते.) विवर्ताः (परिणामा.) यत्र प्रदर्श्यन्ते तत् पुराणम् ब्रह्मवैवर्तम् । प्रकृति के भिन्न–भिन्न परिणामों का जहाँ प्रतिपादन हो, वह पुराण ग्रन्थ ब्रह्मवैवर्त है। ब्रह्मवैवर्त के प्रकृतिखण्ड में प्रकृति के दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री तथा श्रीराधा नामक मुख्य पाँच विवर्तों का वर्णन है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के प्रधान लक्ष्य कृष्णचरित्र का विस्तृत रूप से वर्णन करना है। सृष्टि के अवसर पर परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं दो रूपों में प्रकट होते हैं–प्रकृति और पुरूष। उनका दाहिना अंग पुरूष और बायाँ अंग प्रकृति होता है। वही मूल प्रकृति श्रीराधा है। ये ब्रह्मस्वरूपा नित्या और सनातनी है। फिर इनके पाँच रूप हो गये दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री तथा राधा। इस मूल–प्रकृति देवी के अंश, कला और कलांश भेद से अनेक रूप हैं। गंगा, तुलसी, मनसा, देवसेना, मंगलचण्डी, काली, पृथ्वी, स्वाहा तथा सम्पूर्ण दिव्य देवियाँ इन्हीं से प्रकट हुयी हैं। यहाँ तक की लोक में जितनी भी स्त्रियाँ हैं, वे

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सभी प्रकृति की कला के अंश की अंशरूपा ही हैं। इसलिए स्त्रियों के अपमान को प्रकृति का अपमान समझा जाता है–

"योषितामपमानेन प्रकृतिश्च पराभवः"।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि यह पुराण श्रीराधा जी के महत्ता का प्रतिपादक है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के श्रीकृष्ण जन्मखण्ड में श्रीराधा जी के रहस्यमयी, महिमामयी, पूर्णब्रह्म की शक्ति का प्राणतत्त्व बताया गया है। वहाँ पर राधा जी ने यशोदा जी से अपने नाम की व्युत्पत्ति निम्नांकित तरीके से बतलाया है। एक व्युत्पत्ति के अनुसार 'राधा' शब्द में 'रा' विष्णु तथा 'धा' धात्री (माता या जननी) के अर्थ में प्रयुक्त है। इस प्रकार राधा को विष्णु की जननी, ईश्वरी या मूल–प्रकृति सिद्ध किया गया है

राशब्दश्च महाविष्णुर्विश्वानि यस्य लोमसु।
विश्वप्राणिषु विश्वेषु धा धात्री मातृवाचकः।।
धात्री माताहमेतेषां मूलप्रकतिरीश्वरी।
तेन राधा समाख्याता हरिणा च पुरा बुधैः।।[2]

इसी तरह एक अन्य स्थल पर 'राधा' शब्द का अर्थ बतलाते हुए कहा गया है कि 'रा' शब्द दानवाचक है और 'धा का अर्थ संसिद्ध अर्थात् (निर्वाण) है। इस प्रकार जो स्वयं निर्वाण दिलाने वाली हो वह राधा शब्द से अभिहित किया गया है –

"राधेत्येव च संसिद्धौ रकारोदानवाचकः।
स्वयं निर्वाणदात्री या सा राधा प्रकीर्तिता।[3]

इसी पुराण के ही इसी खण्ड 52वें अध्याय में श्रीराधा शब्द का एक और अर्थ बताते हुए कहा गया है कि 'रा' शब्द के उच्चारण मात्र से ही श्रीकृष्ण हृष्ट–पुष्ट हो जाते हैं और धा धातु के उच्चारण होते ही वे निश्चय ही तीव्रता से उच्चारणकर्ता भक्त के पीछे–पीछे दौड़ पड़ते है। यथा

'रा' शब्दोच्चारणादेव स्फीतो भवति माधवः।
'धा शब्दोच्चारतः पश्चाद्धावत्येव ससंभ्रमः।।[4]

श्रीराधा के श्रीकृष्ण सम्बन्ध सूचक जितने नाम पुराणादि में प्राप्त होते हैं, उतने नाम सम्भवतः अन्य किसी युगल अवतार के नहीं प्राप्त होते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण के श्रीकृष्ण जन्म खण्ड में श्रीराधा सम्बन्ध सूचक श्रीकृष्ण की नामावली बहुत ही प्रेममयी रूप में वर्णित है–

राधावन्धू राधिकात्मा राधिका जीवन स्वयम्।
राधिका सहचरी च राधामानस पूरकः।।
राधाधनो राधिकांगो राधिवकाशक्त मानसः।
राधा प्राणो राधिकेशो राधिका रमणः स्वयम् ।।
राधिका चित्त चोरस्य राधा प्राणाधिकाः प्रभुः।।[5]

राधा और श्रीकृष्ण की लीला से सम्पूर्ण ब्रह्मवैवर्तपुराण के श्रीकृष्णजन्म–खण्ड में राधा–कृष्ण का विशद् रूप से वर्णन मिलता है। श्रीराधा के ब्रज में अवतीर्ण होने का मूल कारण श्रीदामा द्वारा उन्हें श्राप दिया जाना है। एक बार श्रीदामा द्वारा पिता की प्रशंसा और माता की निन्दा सुनकर श्रीराधा जी ने श्रीदामा को शाप दिया कि तुम जिस प्रकार असुर देवों की निन्दा किया करते है, उसी भाँति मेरी निन्दा कर रहे हो इसलिए तुम असुर हो जाओ और गोलोक के बाहर जाकर आसुरी योनि में जन्म ग्रहण करो। इस प्रकार श्रीराधा जी की बात सुनकर श्रीदामा का भी होंठ फड़फड़ाने लगा उसने श्रीराधा जी को शाप दिया कि तुम भी मनुष्य योनि में जाओ। क्योंकि तुम्हारा क्रोध मनुष्य के ही समान है अतः मेरे शाप के कारण तुम्हें भूतल पर मनुष्य योनि में जन्म लेना पड़ेगा। पराशक्ति की छाया या कला द्वारा वहाँ में भूतल पर प्रकट होने पर मूर्ख लोग तुम्हें रायण वैश्य की पत्नी कहेगें, जो वृन्दावन में श्रीकृष्ण के अंश से समुत्पन्न होगा –

मानुष्या इव कोपस्ते तस्मात्त्वं मानुषी भुवि।
भविष्यसि न सन्देहो मया शप्ता त्वमम्बिके।।
छायया कलया वाऽपि परशक्त्या कलंकिना।।

मूढा रायणपत्नी त्वां वक्ष्यन्ति जगतीतलं
रायणः श्रीहरेरंशो वैश्यो वहिदावने
वने भविष्यति महायोगी राधाशापेन गर्भजः।।[6]

श्रीराधा जी को नित्य विकारहीना, निर्गुण होते हुए भी गुण स्वरूपा और सर्वालंकार अलंकृता और उन्हीं को ही सबकी जन्मदात्री माना गया है–

तस्माद्या प्रकति, राधिका, नित्यानिर्गुण सर्वालंकार शोभिता।
प्रशन्नाशेष, लावण्य, सुन्दरी अस्मद् जनानां जन्मदायिनी।।[7]

इसी पुराण में ही श्रीराधा जी को आदि प्रकृति भी कहा गया है–

त्रिगुणात्मिका या सर्व शक्ति समन्विता प्रस्थाने
सृष्टिकरणे प्रकतिस्तेन कथ्यते।।[8]

मूल–प्रकृति निर्विकार है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के श्रीकृष्ण जन्म खण्ड में श्रीकृष्ण जी को अपना अर्धांश और मूल प्रकृति कहा है –

'ममार्धांशस्वरूपस्त्वं मूल प्रकृतिरीश्वरी इसी पुराण में भगवान् श्रीकृष्ण श्रीराधा जी से कहते हैं मैं तुम्हारे बिना जड़वत् हूँ अर्थात् निष्क्रिय हूँ। जिस प्रकार शिवा के बिना शिव 'शव' के समान जड़वत् है–

"त्वया विना जडश्चाद्वं सर्वत्र न च शक्तिमान्।[9]

ब्रह्मवैवर्त पुराण के ब्रह्मखण्ड के 30वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण की पंच प्रकृतियों में मुख्य प्रकृति श्रीराधा जी को कहा गया है जो परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण को प्राणों की अधिष्ठात्री देवी और और श्रीकृष्ण को सबसे प्यारी है। संसार की जितनी भी स्त्रियाँ हैं। वे सब प्रकृति के अंश–अशांश से उत्पन्न या प्रकट होती है। वहीं यह भी उल्लेख है कि स्त्री जाति की पूजा और सम्मान प्रकृति देवी का सम्मान और पूजा है। जो नारी जाति का चाहे अपनी या दूसरी की नारी हो सम्मान करता है, प्रकृति उसे अपना सम्मान समझती है। श्रीराधा श्रीकृष्ण से अभिन्न अर्थात् ब्रह्मस्वरूपा है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण में यह भी उल्लेख है कि श्रीराधा जी और श्रीकृष्ण एक दूसरे के परस्पर आराधना करते हैं–

राधा भजति श्रीकृष्णं स च तां च परस्परम्।
उभयोः सर्वसाम्यं च सदासन्तोवदन्ति च।।[10]

वहीं पर यह भी उल्लेख है कि श्रीराधा श्रीकृष्ण की प्रियतमा तथा श्रीराधा ही श्रीकृष्ण को प्राणों की अधिष्ठात्री देवी हैं –

प्राणाधिष्ठा तदिवी च तस्यैव परस्परम्।
भजत्वं परब्रह्म राधेशं त्रिगुणात्परम् ।।[11]

इसी पुराण के श्रीकृष्ण जन्मखण्ड में ही श्रीराधा जी ने अपने नाम की व्युत्पत्ति यशोदा जी से बताते हुए कहती हैं–

"तेन राधा समाख्याता हरिणा च पुरावुधः''

इसी ब्रह्मवैवर्त पुराण के 29वें अध्याय में राधा के साथ कृष्ण का वन विहार वर्णित है। 52–54वें अध्याय पर्यन्त कृष्ण के अन्तर्धान होने से समस्त गोपियों के साथ राधा का रोदन एवं दुःख निवेदन, पुनः कृष्ण का प्राकट्य होना और राधा के साथ विहार करना, राधा के नाम के प्रथम उच्चारण करने का कारण तथा कृष्ण ब्रह्मवैवर्तपुराण में राधा तत्त्व–एक अनुशीलन द्वारा राधा का श्रृंगार वर्णन किया गया हैं इसी पुराण के प्रकति खण्ड के प्रथम अध्याय में राधा जी की महिमा के सम्बन्ध में यह उल्लेख है कि ब्रह्मा जी ने 60 हजार वर्ष तक श्रीराधा जी का दर्शन करने के लिए तपस्या किया किन्तु उनका दर्शन नहीं कर सके। भगवान की कृपा एवं आशीर्वाद से जब राधा जी का वृन्दावन में वृषभानु की पुत्री के रूप में जन्म हुआ तब ब्रह्मा जी को उनके दर्शन प्राप्त हुए–

यत्रैव राधिकाख्यानमत्यपूर्वं सुन्धोपमम्।[12]

ब्रह्मवैवर्तपुराण के प्रकृतिखण्ड में भगवान् श्रीकृष्ण अपने को त्रितत्त्व कहा है और यह भी कहा है कि मैं कारण भी हूँ, कार्य भी हूँ और उनसे परे भी हूँ। साथ ही अपने आद्या शक्ति श्रीराधा जी को भी उन्होंने त्रितत्त्वरूपिणी माना है–

'त्रितत्त्व रूपिणी सापि राधिका मम वल्लभा'

इसी प्रकार श्रीराधा भी कार्य, कारणरूपा और इससे परे परत्व रूप होकर भगवच्छक्ति के रूप में सर्वव्याप्त है–

"प्रकतिः परा इवां सापि मच्छक्ति रूपिणी"

इसलिए जब भगवान् श्रीकृष्ण का भूतल पर अवतरण होता है तब वे भी श्रीकृष्ण के साथ गोलोक से मनुजाकृति में अवतीर्ण होकर भगवान् की लीला सम्पादन में सहचरी होती है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में भगवान श्रीकृष्ण ने बलराम जी से कहा भी है कि तुम्हारे साथ और उसके (राधा) के साथ देवद्रोहियों के विनाश के लिए मैं अवरित होता हूँ–

"त्वया सार्द्धं तया सादर्धं नाशाय देवता द्रुहाम्''

इसी को आधार मानकर वल्लभ मत में श्रीराधा जी को स्वकीया माना गया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं इस पुराण का प्रधान लक्ष्य कृष्णचरित्र का विस्तृत वर्णन है। सृष्टि के अवसर पर परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं दो रूपों में प्रकट हो गये–प्रकृति और पुरूष। उनका दाहिना अंश पुरूष और बायाँ अंश प्रकृति हुआ। वही मूल प्रकृति श्रीराधा हुयी। ये ब्रह्मस्वरूपा नित्या और सनातनी है। फिर इनके पाँच रूप हो गये–(1) दुर्गा (2) महालक्ष्मी (3) सरस्वती (4) सावित्री (5) और श्रीराधा। इस मूल–प्रकृति देवी के ही अंश, कला, कलांश भेद से अनेक रूप हैं। गंगा, तुलसी, मनसा, देवसेना, काली तथा सम्पूर्ण दिव्य देवियाँ इन्हीं से प्रकट हुयी हैं। यहाँ तक कि लोक में जितनी स्त्रियां है, वे सभी इन्हीं प्रकृति देवी के अंशरूपा है। इसलिए स्त्रियों का अपमान प्रकृति का अपमान समझना चाहिए। इस प्रकार उपक्रम, उपसंहार तथा अभ्यास आदि तात्पर्य–निर्णय के साधनानुसार इस ग्रन्थ का यह सिद्धान्त स्वीकार किया जा सकता है कि श्रीराधा ही परम तत्त्व है। त्याग, तपस्या, वैराग्य, धर्म, सदाचार आदि के सदुपदेश तो इसमें कूट–कूट कर भरे हैं। सर्वप्रथम एक सुप्रसिद्ध मन्त्र देखिए जिसे प्रत्येक कर्मकाण्डी कार्यारम्भ में पढ़कर अपने ऊपर जल छिड़कता है–

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।[13]

सन्दर्भ सूची

1. ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्मखण्ड 2
2. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृ0ज0 खण्ड 111/57–58
3. वही, 16/226
4. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृ०ज0 खण्ड 52/39
5. वही, 13/77–79
6. वही, 3/103––105
7. ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृ0 ज0 खण्ड 55–87
8. वही, 17
9. वही
10. वही, 48/38–47
11. वही, 48/48
12. ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड अध्याय, 1/25
13. ब्रह्मखण्ड 17/17